लुई पाश्चर

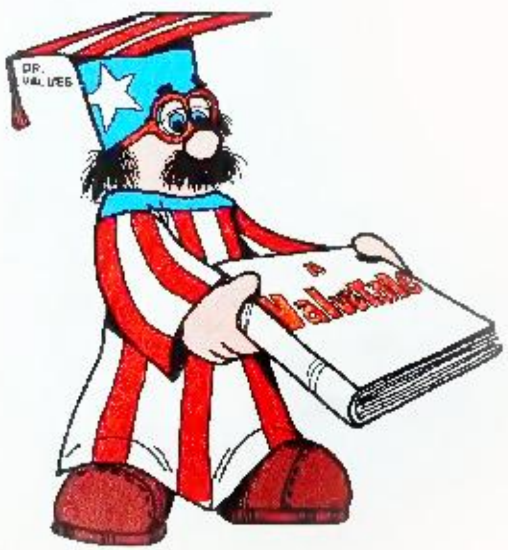


स्वयं पर विश्वास का महत्व

लेखक : स्पेंसर जॉनसन

चित्रसज्जा : स्टीव पिलेजी

हिंदी: योगेश



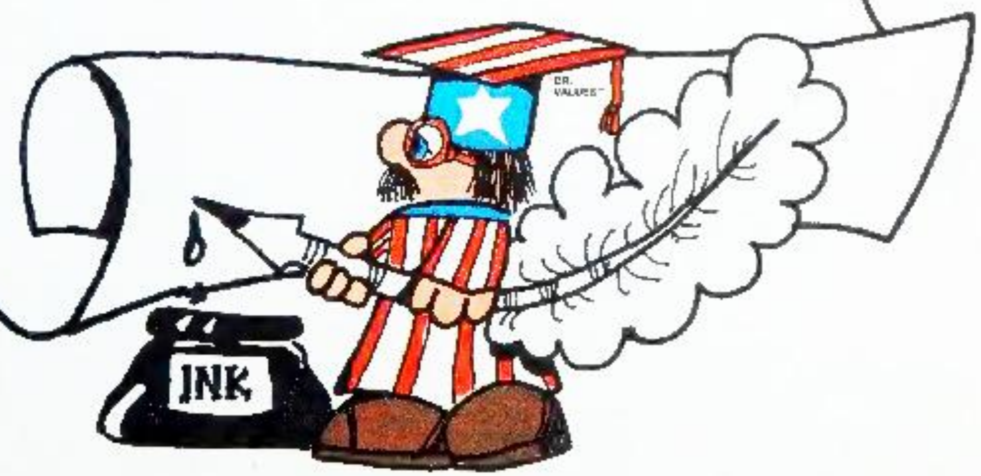
लुई पाश्चर

स्वयं पर विश्वास का महत्व

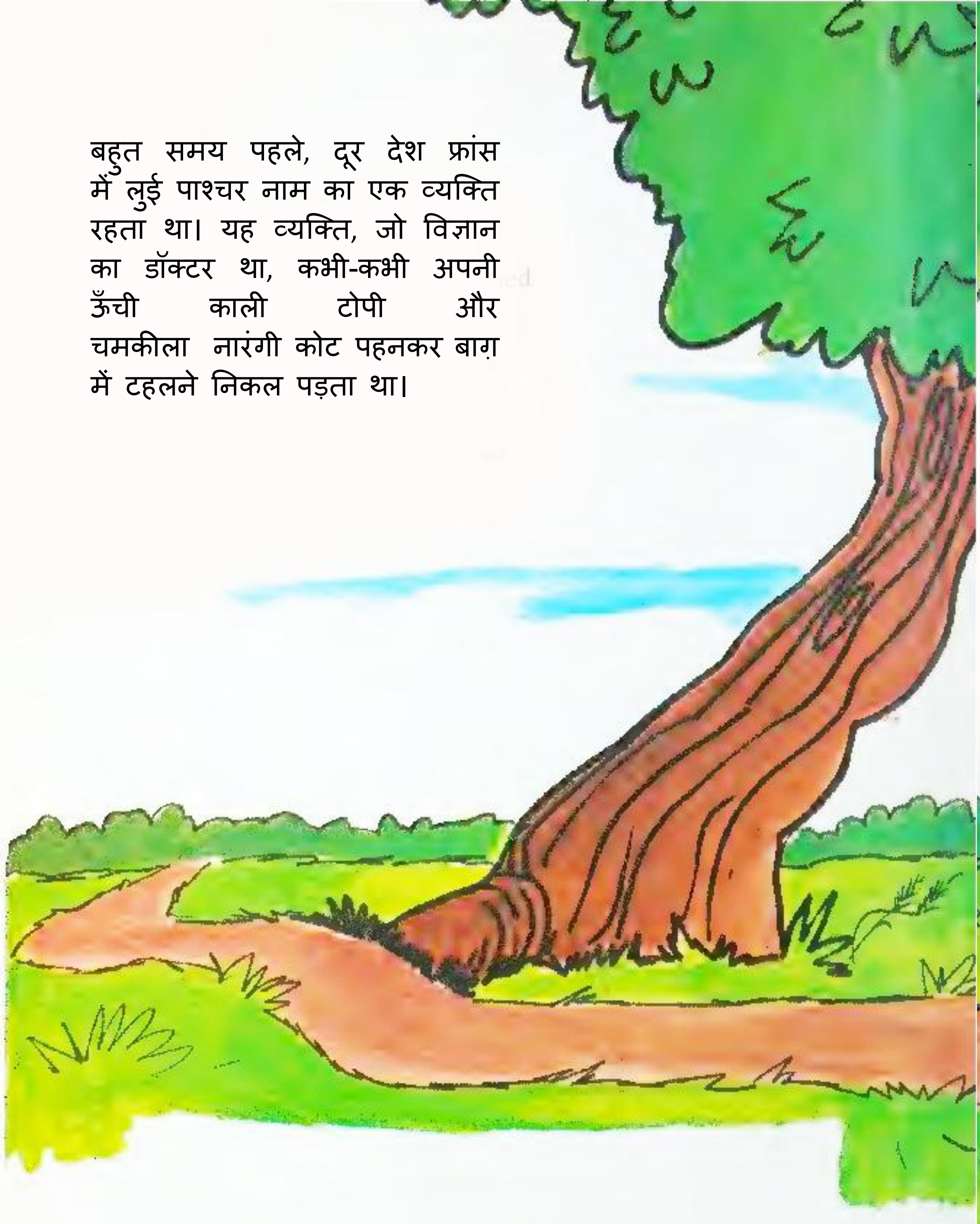
लेखक : स्पेंसर जॉनसन

चित्रसज्जा : स्टीव पिलेजी

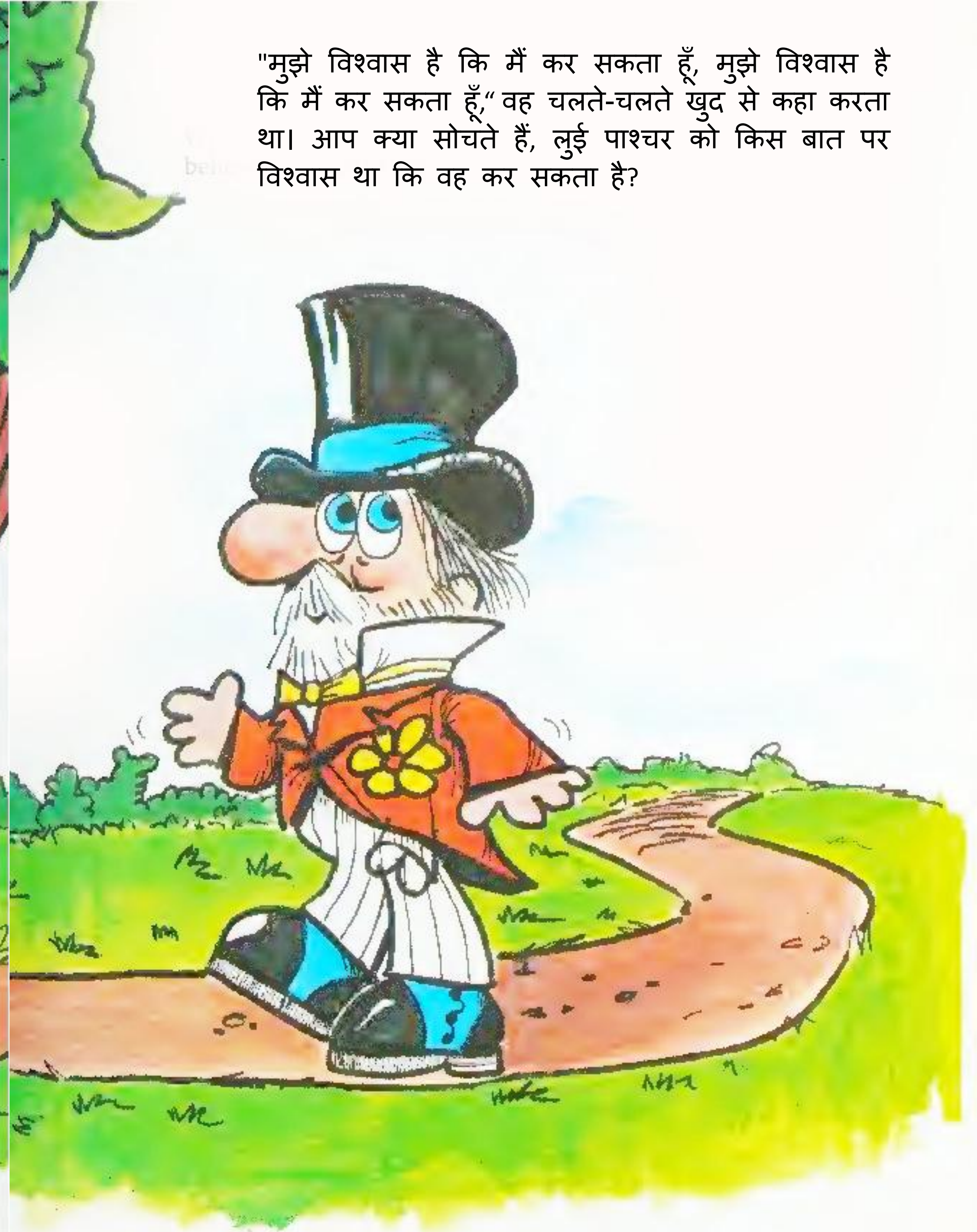
हिंदी: योगेश



बहुत समय पहले, दूर देश फ्रांस में लुई पाश्चर नाम का एक व्यक्ति रहता था। यह व्यक्ति, जो विज्ञान का डॉक्टर था, कभी-कभी अपनी ऊँची काली टोपी और चमकीला नारंगी कोट पहनकर बाग़ में टहलने निकल पड़ता था।



"मुझे विश्वास है कि मैं कर सकता हूँ, मुझे विश्वास है कि मैं कर सकता हूँ," वह चलते-चलते खुद से कहा करता था। आप क्या सोचते हैं, लुई पाश्चर को किस बात पर विश्वास था कि वह कर सकता है?



यह कुछ बहुत ही महत्वपूर्ण बात थी — इतनी महत्वपूर्ण कि लुई पाश्चर पार्क में मौजूद अन्य लोगों को देख तक नहीं रहे थे।

“मुझे अदृश्य शत्रु को ढूँढना होगा,” उन्होंने कहा। “मुझे वे रेबीज़ के रोगाणु ढूँढने हैं जो लोगों के भीतर छिपकर उन्हें बीमार कर देते हैं — इतने बीमार कि वे मर जाते हैं।”



“एक बार जब मैं उस अदृश्य शत्रु को ढूँढ लूँगा, तो मैं उसे मारने का भी कोई उपाय निकाल लूंगा। तब बीमार लोग फिर से ठीक हो जाएंगे।”

लुई पाश्चर एक बेंच पर बैठे और उस अदृश्य शत्रु के बारे में सोचने लगे।

“मुझे विश्वास है कि मैं यह कर सकता हूँ,” उन्होंने कहा।



"क्या मूर्ख आदमी है!" कुछ बच्चे, जो वहाँ पास ही थे, बोले। "अगर कोई शत्रु अदृश्य है, तो इसका मतलब है कि कोई उसे देख ही नहीं सकता। अगर कोई उसे देख नहीं सकता, तो कोई उसे ढूँढ भी नहीं सकता।"

लुई पाश्चर ने उन जिज्ञासु बच्चों की बात न सुनने का नाटक किया। वह पेरिस की उल्म स्ट्रीट पर स्थित अपने प्रयोगशाला की ओर जल्दी-जल्दी चल पड़े, जहाँ वह हर दिन काम करते थे।



कुछ बच्चे उनके पीछे-पीछे चले गए। कुछ बड़े लोग भी चले आए, जो जानना चाहते थे वह क्या कर रहे हैं। वे प्रयोगशाला की खिड़की से झाँकने लगे।

"तुम यह कभी भी नहीं कर पाओगे!" उन्होंने चिल्लाकर कहा। "कोई भी अदृश्य शत्रु को नहीं ढूँढ सकता!"

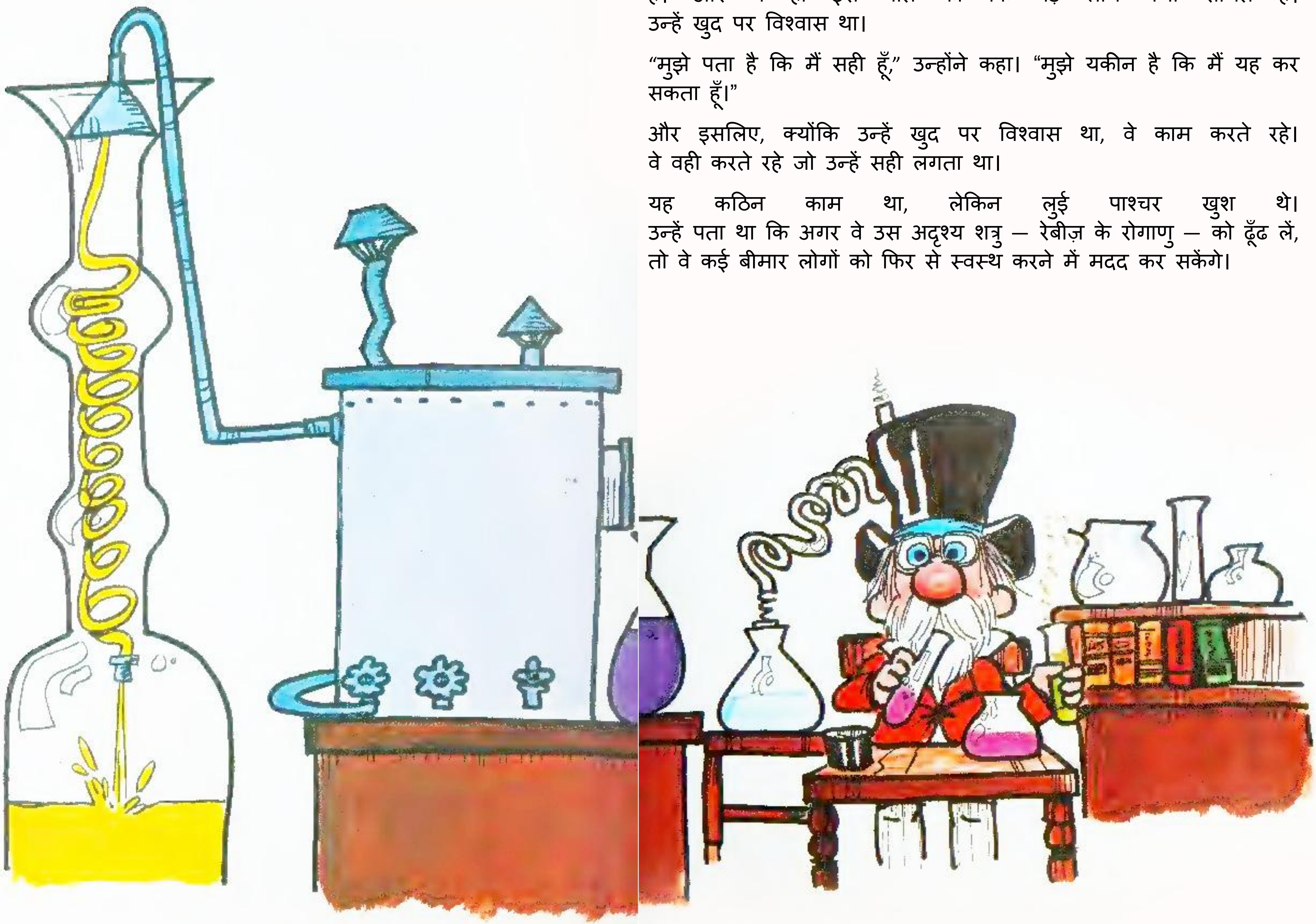


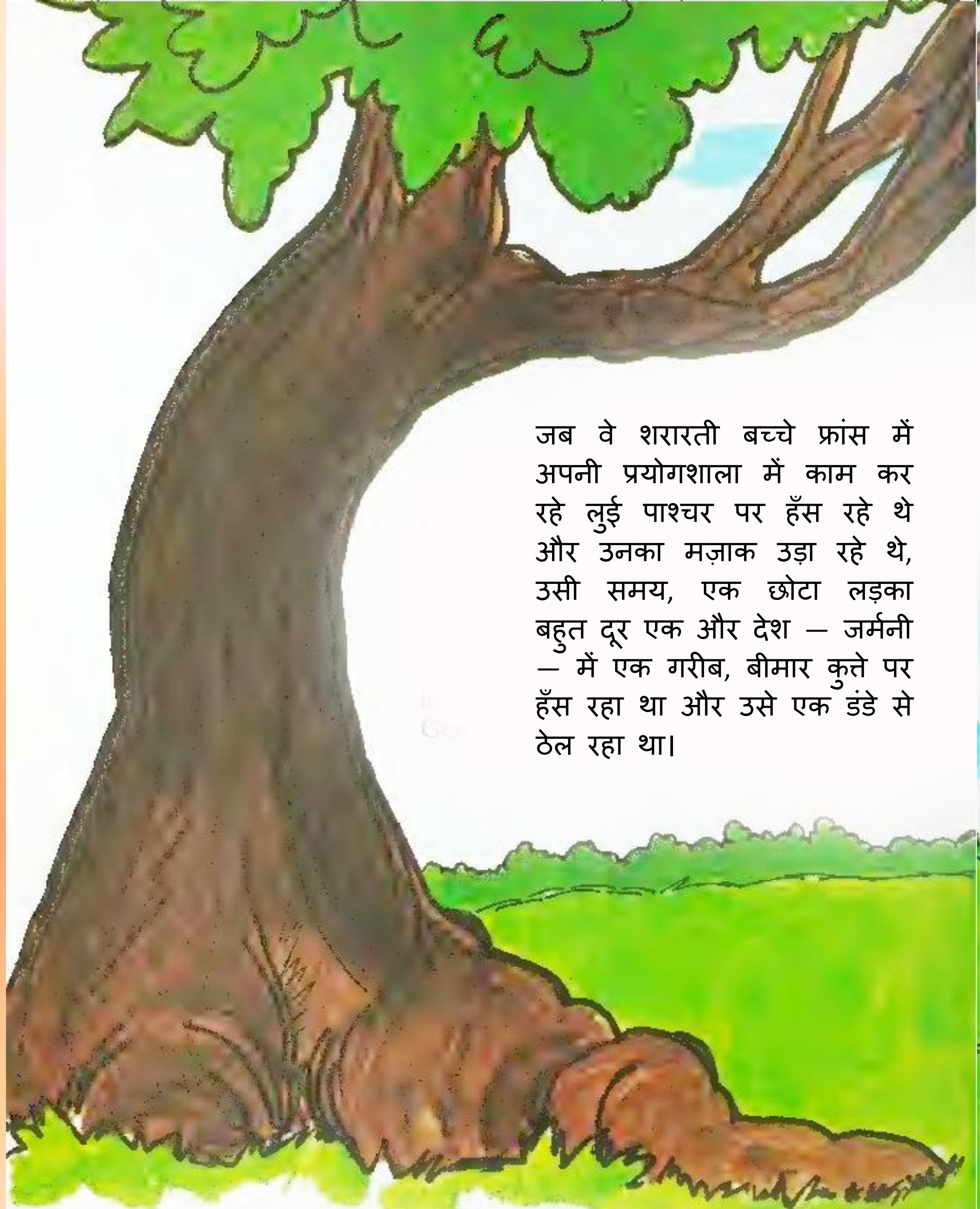
लुई पाश्चर को इस बात की तनिक भी परवाह नहीं थी कि बच्चे क्या सोचते हैं। और न ही इस बात की कि बड़े लोग क्या सोचते हैं। उन्हें खुद पर विश्वास था।

“मुझे पता है कि मैं सही हूँ,” उन्होंने कहा। “मुझे यकीन है कि मैं यह कर सकता हूँ।”

और इसलिए, क्योंकि उन्हें खुद पर विश्वास था, वे काम करते रहे। वे वही करते रहे जो उन्हें सही लगता था।

यह कठिन काम था, लेकिन लुई पाश्चर खुश थे। उन्हें पता था कि अगर वे उस अदृश्य शत्रु — रेबीज़ के रोगाणु — को ढूँढ लें, तो वे कई बीमार लोगों को फिर से स्वस्थ करने में मदद कर सकेंगे।



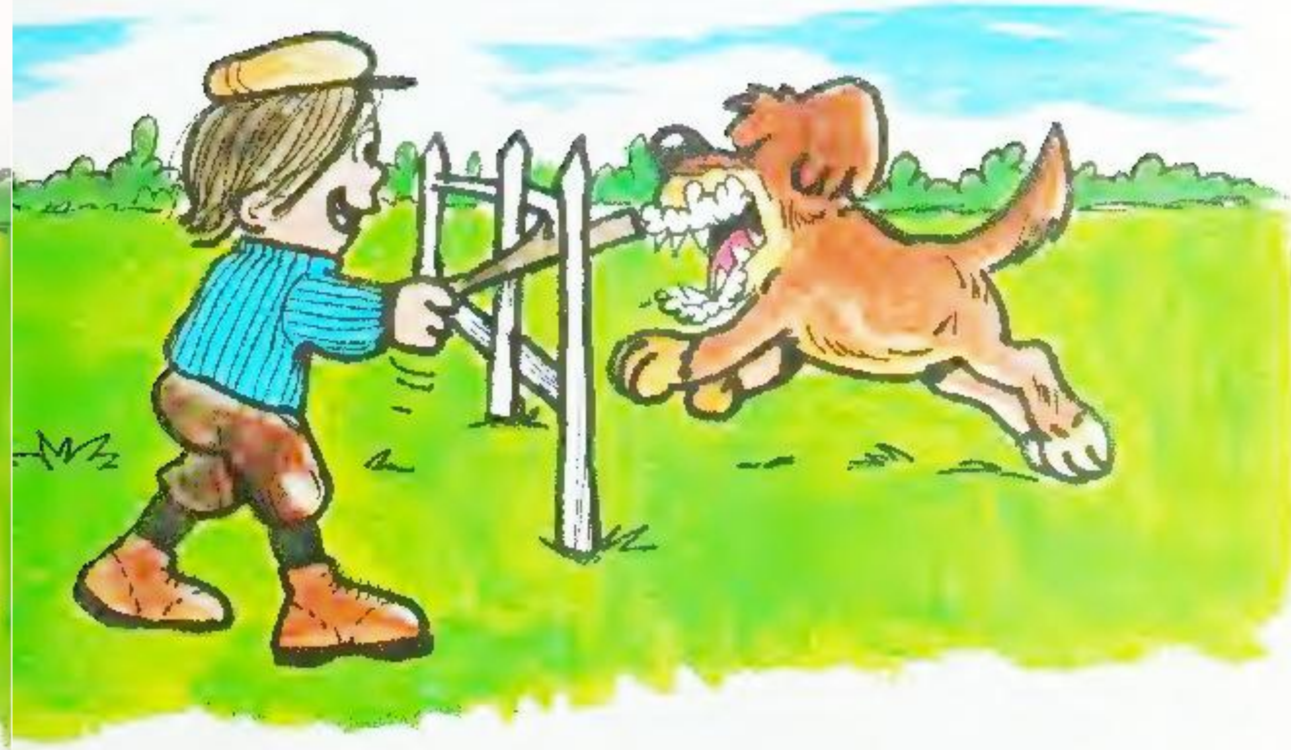


जब वे शरारती बच्चे फ्रांस में अपनी प्रयोगशाला में काम कर रहे लुई पाश्चर पर हँस रहे थे और उनका मज़ाक उड़ा रहे थे, उसी समय, एक छोटा लड़का बहुत दूर एक और देश — जर्मनी — में एक गरीब, बीमार कुत्ते पर हँस रहा था और उसे एक डंडे से ठेल रहा था।

लड़के का नाम जोई था। वह सच में कोई निर्दयी बच्चा नहीं था। वह बस लापरवाह था, जैसा बच्चे कभी-कभी होते हैं, और उसे दूसरों को छेड़ना अच्छा लगता था, जैसा बच्चे कभी-कभी करते हैं।

थोड़ी ही देर में जोई ने देखा कि कुत्ता बहुत गुस्से में है। उसके मुँह के चारों ओर सफेद झाग था — ठीक फेंटी हुई क्रीम जैसा। वह भौंकने की कोशिश कर रहा था, जैसे कह रहा हो, “रुको! रुको!” लेकिन वह भौंक नहीं पा रहा था।

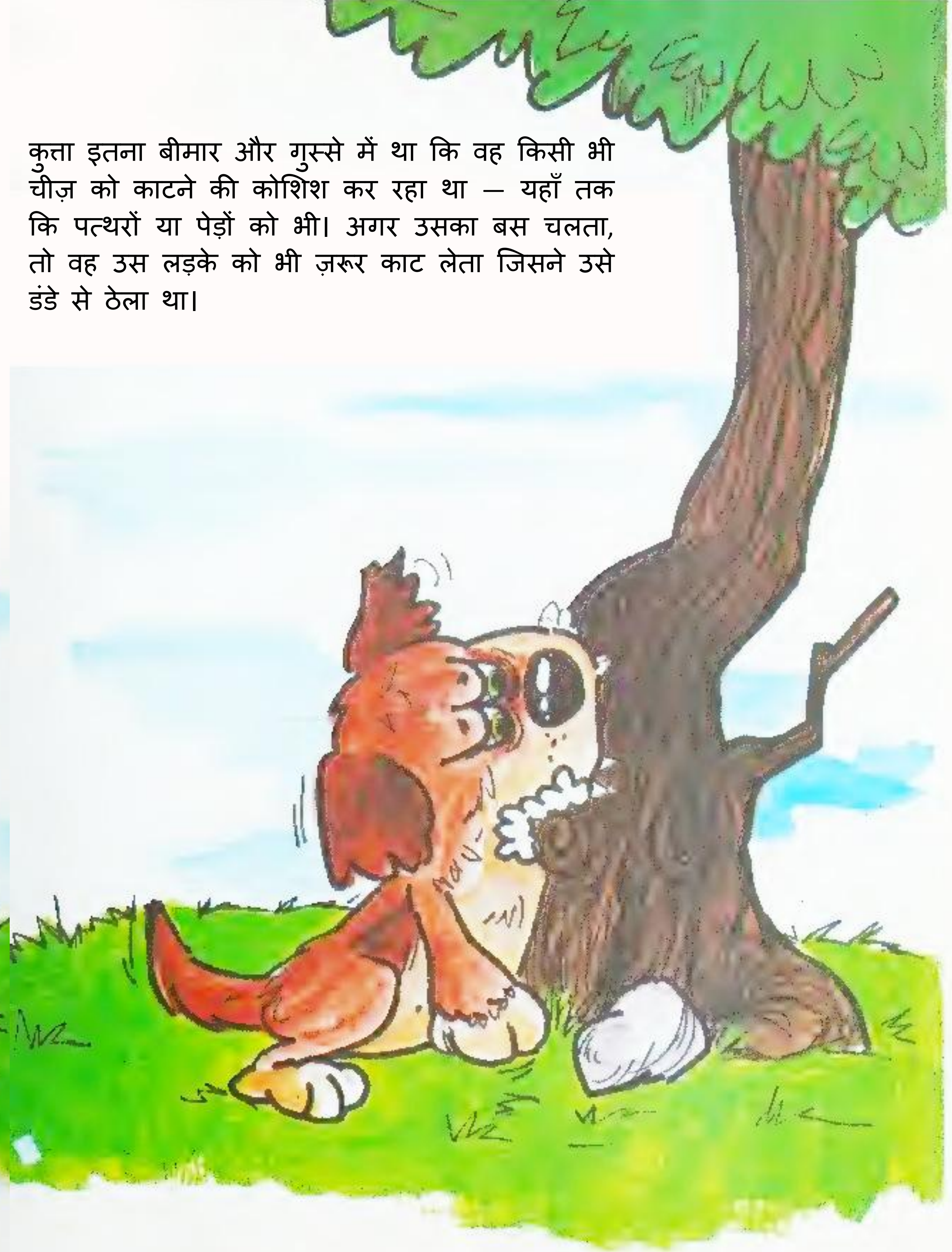
कुछ तो गड़बड़ था! क्या तुम्हें पता है कि क्या गड़बड़ी थी?



मान लो कि तुम उस कुत्ते के अंदर किसी दूरबीन से झाँक सकते। तब तुम्हें क्या दिखाई देता? बिलकुल सही! तुम्हें वह अदृश्य शत्रु दिखाई देता — रेबीज़ के रोगाणु — जो उस कुत्ते को इतना बीमार बना रहे थे।



कुत्ता इतना बीमार और गुस्से में था कि वह किसी भी चीज़ को काटने की कोशिश कर रहा था — यहाँ तक कि पत्थरों या पेड़ों को भी। अगर उसका बस चलता, तो वह उस लड़के को भी ज़रूर काट लेता जिसने उसे डंडे से ठेला था।





जब जोई वहाँ से चला गया, तो उसने एक बहुत ही महत्वपूर्ण बात पर ध्यान नहीं दिया।

क्या तुम देख सकते हो कि वह क्या बात थी? हाँ, वह था — फाटक। बाड़ का फाटक खुल गया था। वह पागल, बीमार कुत्ता अब बाहर निकल सकता था। वह जोई के पीछे भाग सकता था और उसे काट सकता था।



और बिल्कुल वही हुआ। “आह! आह!” जोई चिल्लाया, जब उस पागल, बीमार कुत्ते ने उसके हाथों और पैरों पर काट लिया। और फिर यह हुआ! वह अदृश्य शत्रु — रेबीज़ के रोगाणु — जो कुत्ते के अंदर छिपे हुए थे, कुत्ते के झाग से भरे मुँह से उस छोटे लड़के के शरीर में पहुँच गए।

“बचाओ! बचाओ!” जोई चिल्लाया।
“पापा! कृपया मेरी मदद कीजिए!”



जोई के पिता ने उसकी आवाज़ सुनी और यह देखने के लिए अपने घर से बाहर दौड़े कि क्या हुआ है। जब उन्होंने देखा कि कुत्ता उनके छोटे बेटे को काट रहा है, तो वे बुरी तरह डर गए। हाँ, वह एक बड़े, ताकतवर आदमी थे, लेकिन फिर भी डर गए।

कभी-कभी बड़े लोग भी डर जाते हैं।

लेकिन जोई के पिता बहादुर थे। वह कुत्ते की ओर दौड़े। “चल भाग! भाग यहाँ से!” वह कुत्ते पर ज़ोर से चिल्लाये। उन्होंने अपने हाथ हिलाए और ज़ोर-ज़ोर से पैर पटके। कुत्ता वहाँ से भाग गया।





जोई के पिता ने कुत्ते को फाटक के पार वापस खदेड़ दिया। जब कुत्ता सुरक्षित रूप से बाड़ के अंदर चला गया, तो जोई के पिता ने सावधानी से फाटक बंद कर दिया। लेकिन नुकसान तो हो चुका था!



छोटा लड़का ज़मीन पर लेटा हुआ था, रो रहा था और खून बह रहा था। उसे चौदह बार काटा गया था। “मुझे डर है कि मेरा बेटा बहुत बीमार हो जाएगा,” जोई के पिता ने मन ही मन सोचा।

उसके पिता ने जोई को उठाया। "क्या तुमने उस कुत्ते को छेड़ा था?" उन्होंने पूछा। "हाँ, डैडी, मुझे माफ़ कर दीजिए," जोई ने धीमे से कहा। वह बुरी तरह घायल था और बहुत थका हुआ महसूस कर रहा था।

"मैं तुम्हें घर ले चलता हूँ," पिता ने दुखी होकर कहा। वह उदास थे क्योंकि उन्हें पता था कि उनके बेटे के साथ बहुत भयानक घटना हो चुकी थी।



अब उस छोटे लड़के के भीतर एक अदृश्य दुश्मन, यानि रेबीज़ के कीटाणु, पहुँच गए थे । जल्द ही वह न सिर्फ़ घायल और थका हुआ महसूस कर रहा था, बल्कि बीमार भी हो गया। जो लोग जोई को जानते थे, वे सब बहुत दुखी था।

सबको पता था कि अगर किसी को किसी बीमार, पागल कुत्ते ने काट लिया, तो वह व्यक्ति निश्चित रूप से मर जाएगा।





कुछ ही समय बाद वह बीमार कुत्ता मर गया।

जोई के घर में सन्नाटा छा गया था। उसके माता-पिता नहीं जानते थे कि जोई की मदद कैसे करें। वे बस इंतज़ार ही कर सकते थे।



फिर, एक दिन एक खबर आई।

जोई की माँ ने उसे सबसे पहले देखा, और खुशी से चिल्ला उठीं। “कमाल हो गया! कमाल हो गया!” वह बोलीं। जब उनका छोटा बेटा मर रहा था, तो वह किसी बात को अद्भुत कैसे कह सकती थीं?

आप क्या सोचते हैं — उन्होंने अख़बार में क्या पढ़ा होगा?

“एक वैज्ञानिक डॉक्टर ने जोई जैसे लोगों को बचाने का तरीका खोज लिया है!” उन्होंने कहा। “वह कहते हैं कि जोई जैसे बीमार लोगों के शरीर में एक अदृश्य दुश्मन घुस गया है। उन्होंने उस दुश्मन को ढूँढ़ निकाला है — और उसे मारने का तरीका भी खोज लिया है!”

क्या तुम जानते हो, वह व्यक्ति कौन था?

बिलकुल! वह लुई पाश्चर ही था — वह व्यक्ति जो खुद पर विश्वास करता था। उसे पता था कि वह सही है, और उसने वही किया जो वह करना चाहता था।

“सुनिए, हमें एक घोड़ा-गाड़ी की ज़रूरत होगी,” जोई की माँ ने कहा। “हमें जोई को पेरिस ले जाना होगा, डॉ. लुई पाश्चर से मिलने। शायद वह जोई की जान बचा सकें।”





जोई के पिता दौड़े। उन्होंने एक बढ़िया घोड़ा-गाड़ी और एक मज़बूत, कुशल कोचवान किराए पर लिया। छह तेज़ सफेद घोड़े गाड़ी में जोते गए।

जोई के माता-पिता ने उसे गर्म, मुलायम कंबलों में लपेटा और गाड़ी में बैठा दिया।

“काश वह कुत्ता नहीं मरा होता,” जोई ने उदासी से कहा। “या फिर, काश मैंने उस कुत्ते को डंडे से नहीं ठेला होता।”

“जल्दी चलो!” कोचवान ने चिल्ला कर कहा। “हमारे पास एक पल भी खोने का समय नहीं है!”





"जल्दी करो!" जोई की माँ ने कहा। घोड़े पेरिस जाने वाली लंबी सड़क पर तेज़ी से दौड़ रहे थे। "जल्दी करो!" जोई के पिता ने भी विनती की। सड़क के किनारे के पेड़ भी जैसे फुसफुसा रहे थे — "जल्दी! जल्दी! तेज़! और तेज़!"

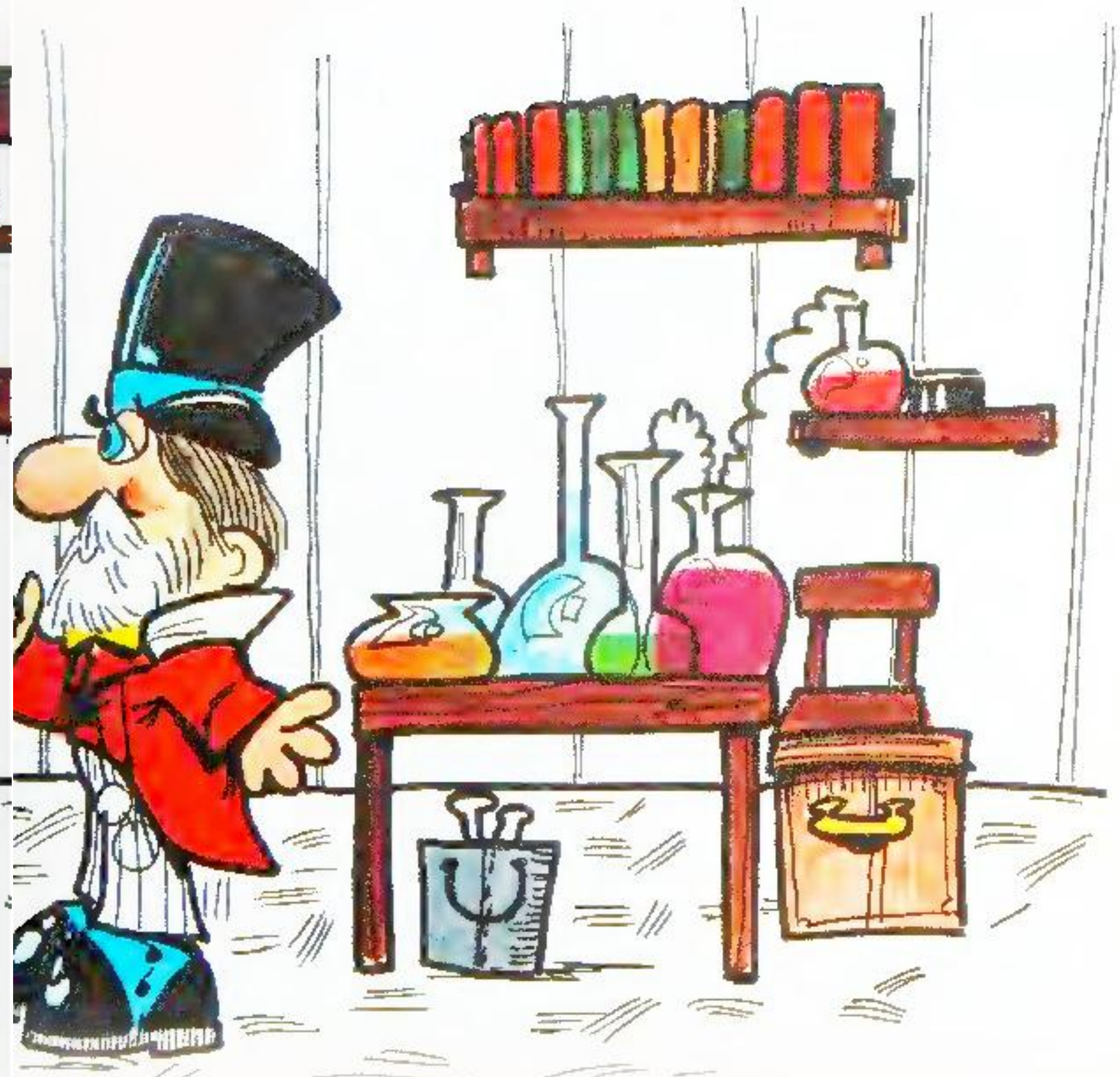


जब वे लुई पाश्चर के दरवाज़े पर पहुँचे, तो थके हुए और धूल से ढके हुए थे, लेकिन वहाँ पहुँचकर वे बहुत खुश थे।

उन्होंने दरवाज़ा खटखटाया, और लुई पाश्चर ने दरवाज़ा खोलकर उनका स्वागत किया।



“डॉ. पाश्चर,” माँ ने एक साहसिक मुस्कान के साथ कहा, “हम आपसे मिलने बहुत दूर से आए हैं। हमारे छोटे बेटे को एक पागल कुत्ते ने काट लिया है, और वह बहुत बीमार है। क्या आप हमारी मदद कर सकते हैं?”



“शायद,” लुई पाश्चर ने कहा। “मैंने उस अदृश्य दुश्मन, यानि रेबीज़ के कीटाणुओं को जो शरीर के अंदर छिपे रहते हैं, मारने का एक तरीका खोज लिया है। शायद मैं आपके नन्हे बेटे के अंदर छिपे हुए कीटाणुओं को भी मार सकूँ।”

"मैंने एक टीका (वैक्सीन) खोज लिया है," लुई पाश्चर ने समझाया। "मेरे टीके में जादुई सैनिक होते हैं जिनकी चमकदार आँखें होती हैं जो अंधेरे में भी देख सकती हैं। जब वे जोई के भीतर छिपे हुए अदृश्य दुश्मन को देखेंगे, तो मेरे ये जादुई सैनिक, जो बहुत ताकतवर हैं, उस दुश्मन को मार डालेंगे।"

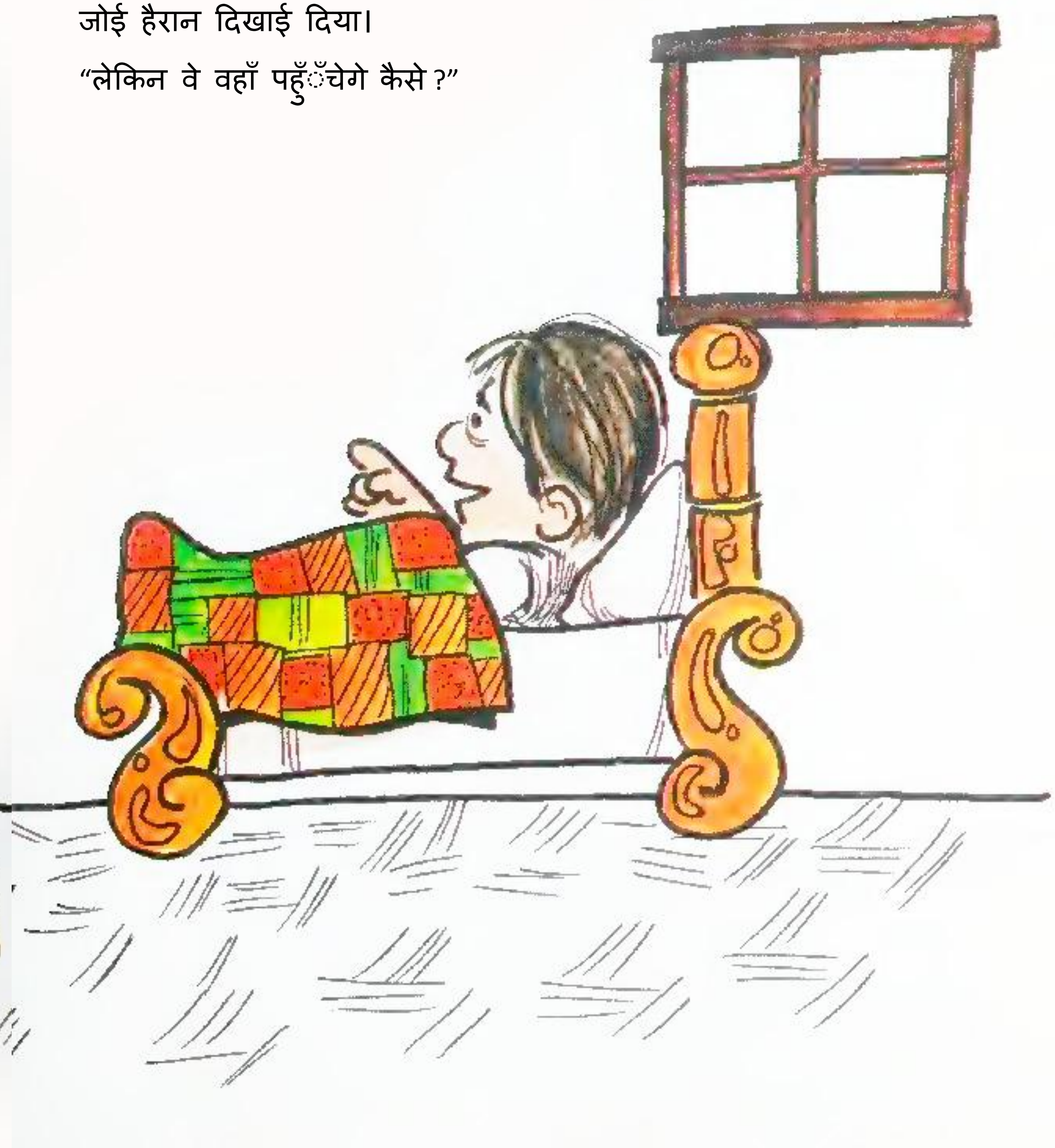


जोई को बिस्तर पर लिटा दिया गया था। जब उसने लुई पाश्चर को यह कहते सुना, तो वह थोड़ा उठ बैठा। "डॉ. पाश्चर," वह बोला, "क्या आपका मतलब है कि आपके जादुई सैनिक मेरे अंदर घुसेंगे?"

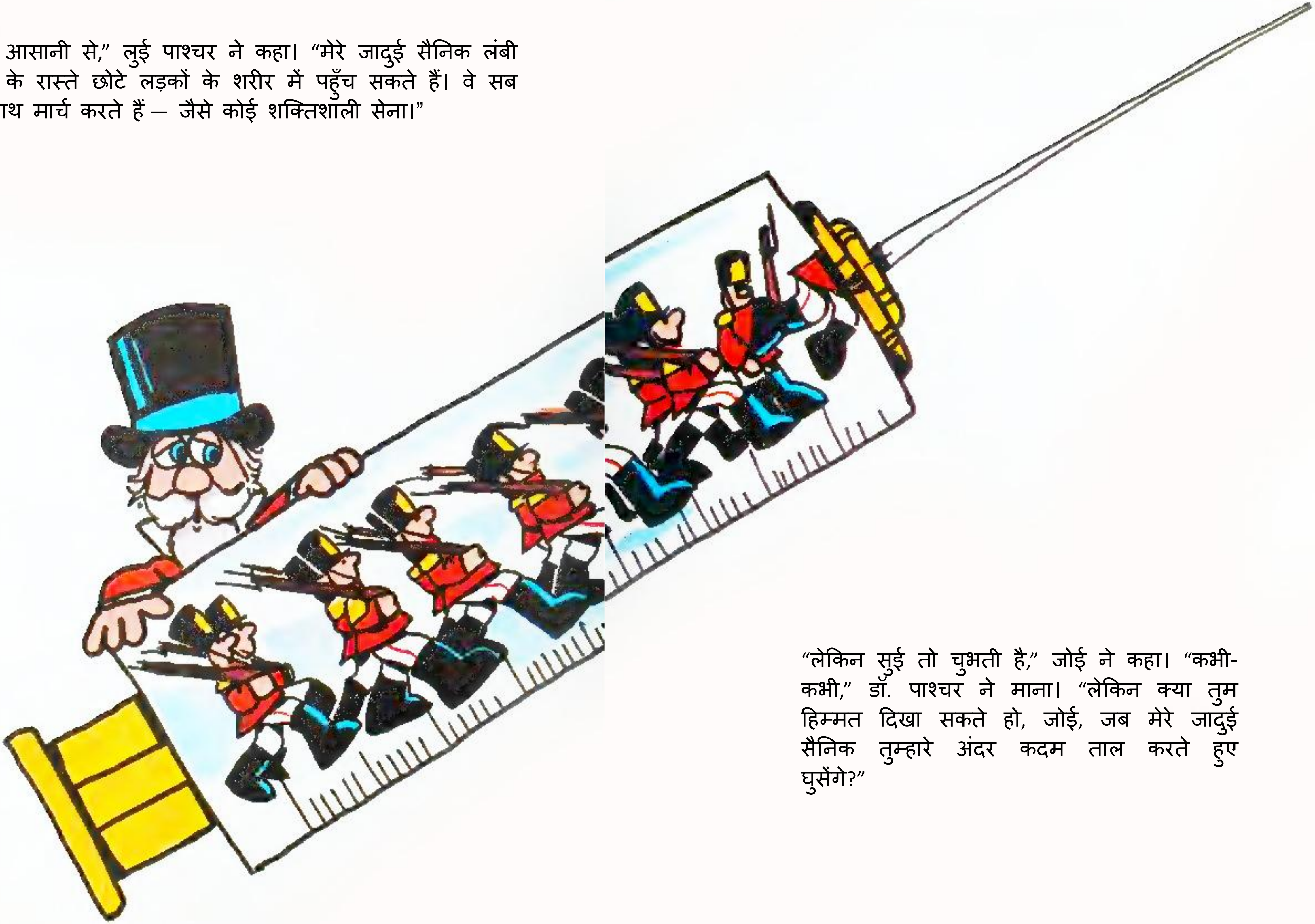
"हाँ," लुई पाश्चर ने कहा।

जोई हैरान दिखाई दिया।

"लेकिन वे वहाँ पहुँँचेगे कैसे ?"



“बहुत आसानी से,” लुई पाश्चर ने कहा। “मेरे जादुई सैनिक लंबी सुइयों के रास्ते छोटे लड़कों के शरीर में पहुँच सकते हैं। वे सब एक साथ मार्च करते हैं — जैसे कोई शक्तिशाली सेना।”



“लेकिन सुई तो चुभती है,” जोई ने कहा। “कभी-कभी,” डॉ. पाश्चर ने माना। “लेकिन क्या तुम हिम्मत दिखा सकते हो, जोई, जब मेरे जादुई सैनिक तुम्हारे अंदर कदम ताल करते हुए घुसेंगे?”

"मैं बहुत बहादुर बनूँगा," जोई ने वादा किया। "तो फिर तुम मेरे रेबीज़ टीके का इंजेक्शन लेने वाले पहले व्यक्ति बनोगे," लुई पाश्चर ने कहा।



यह सुनकर जोई के पिता थोड़े चिंतित हो गए। "सबसे पहला व्यक्ति?" उन्होंने सोचा। "कहीं इसमें कोई खतरा तो नहीं? क्या आपको यकीन है कि आपका टीका एक छोटे बच्चे पर काम करेगा?"

"मुझे पूरा विश्वास है कि यह काम करेगा," लुई पाश्चर ने कहा, और उन्होंने जोई को इंजेक्शन दे दिया।

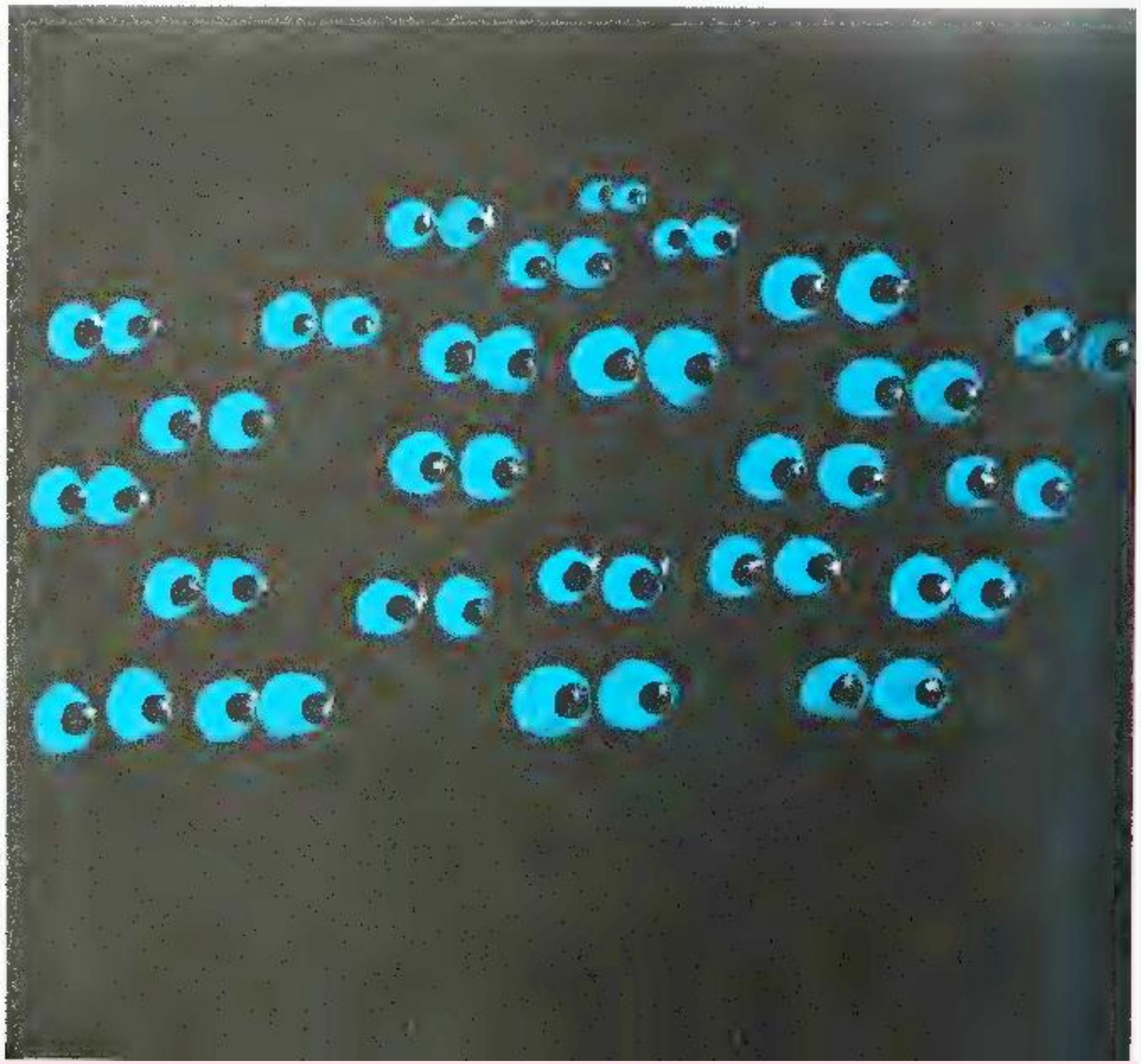
जादुई सैनिक छोटे लड़के के शरीर में भीतर तक मार्च करते चले गए।



जब वे जोई के अंदर पहुँचे, तो वहाँ अँधेरा था। जादुई सैनिकों ने अपनी जादुई आँखों से इधर-उधर झाँका। आख़िरकार उन्होंने दुश्मन को देख ही लिया – वे रेबीज़ के कीटाणु, जो अब तक अदृश्य थे।

शुरू में उन्हें केवल बारह कीटाणु दिखाई दिए। क्या तुम भी उन्हें देख सकते हो?

लेकिन उन्हें पता था कि वास्तव में जोई के अंदर लाखों कीटाणु छिपे हुए थे।



"तुम हमें कभी नहीं हरा पाओगे!" उन भयानक कीटाणुओं ने कहा।
"हम तुम्हें ज़रूर हराएँगे !" जादुई सैनिकों ने चिल्ला कर कहा।



युद्ध शुरू हो गया। जादुई सैनिकों ने अदृश्य दुश्मनों पर हमला किया और वीरता से लड़े।

जोई के लिए यह कोई सुखद अनुभव नहीं था। क्या तुम आराम महसूस करोगे अगर तुम्हारे भीतर जादुई सैनिकों की एक सेना युद्ध लड़ रही हो?

लेकिन जैसे-जैसे रेबीज़ के टीके के जादुई सैनिक दुश्मनों को एक-एक करके मारते गए, जोई को धीरे-धीरे बेहतर महसूस होने लगा।



जब आख़िरी दुश्मन भी हार गया, तो जोई बिल्कुल ठीक महसूस करने लगा — इतना ठीक कि वह बिस्तर से कूद पड़ा और अपनी माँ, पिता, और बेशक डॉ. लुई पाश्चर के साथ खुशी-खुशी नाचने लगा। डॉ. पाश्चर भी उतने ही खुश थे जितने बाकी सब।

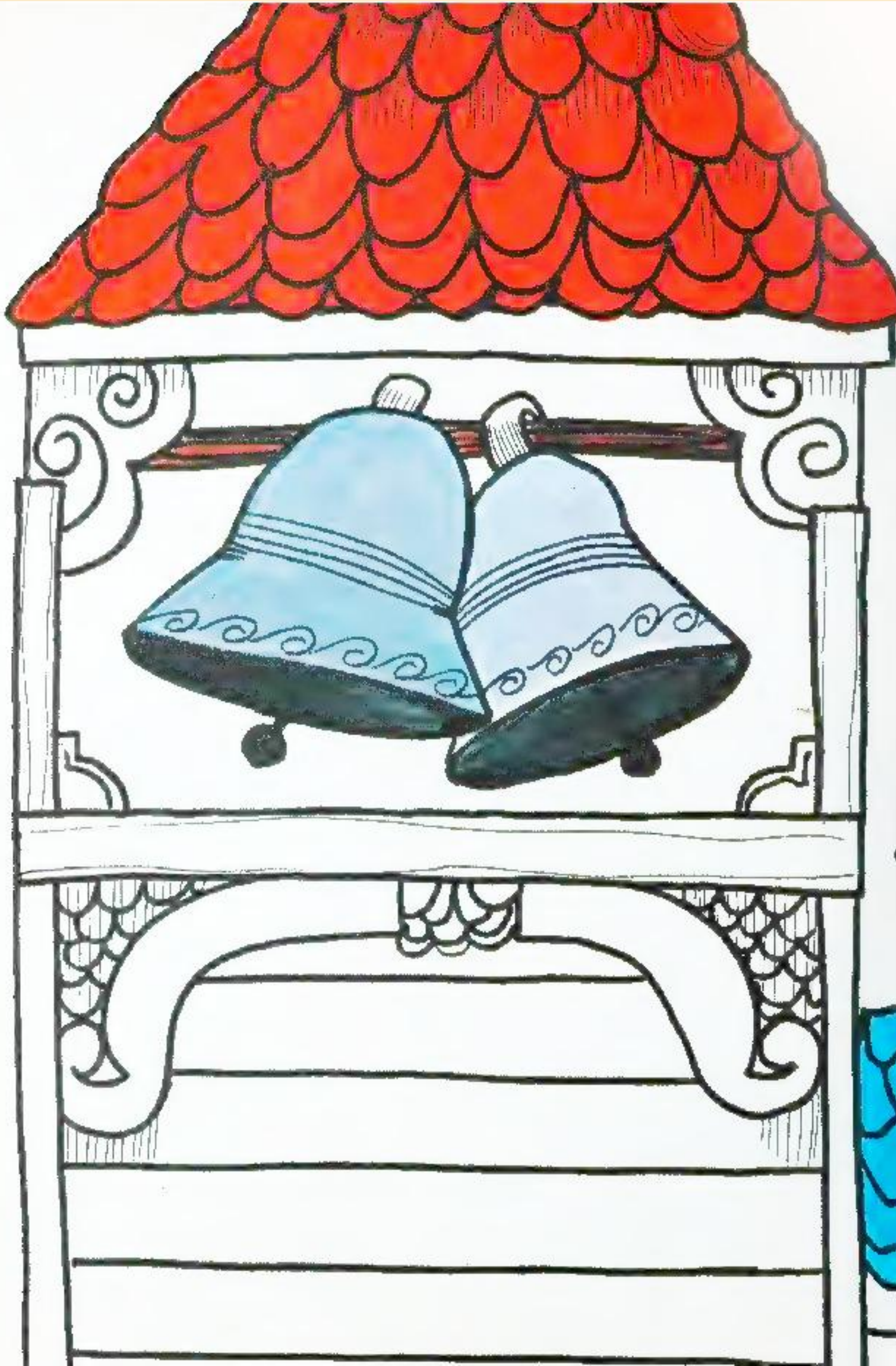
“हुर्रे! हुर्रे!” सबने मिलकर खुश होकर पुकारा।





फिर जोई ने लुई पाश्चर का धन्यवाद किया और अपने माता-पिता के साथ गाड़ी में बैठकर वापस जर्मनी के अपने गांव को लौट गया।

जोई के गाँव में लोग सड़कों के दोनों ओर खड़े थे। वे हँस रहे थे और जोई को हाथ हिला-हिलाकर अभिवादन कर रहे थे। हर कोई इस बात से खुश था कि वह ज़िंदा है। आसमान में चमकता पीला सूरज भी जैसे खुश दिखाई दे रहा था।



छतों के ऊपर, गाँव की घंटियाँ खुशी का संगीत बजा रही थीं। वे जैसे गा रही हों — "सुरक्षित! सुरक्षित! अब सब सुरक्षित हैं! अब किसी को रेबीज़ से मरना नहीं पड़ेगा!"

और यह सब संभव हुआ लुई पाश्चर की वजह से — उस व्यक्ति की वजह से, जिसे पता था कि वह सही है, और जिसने वही किया जो उसने ठाना था।

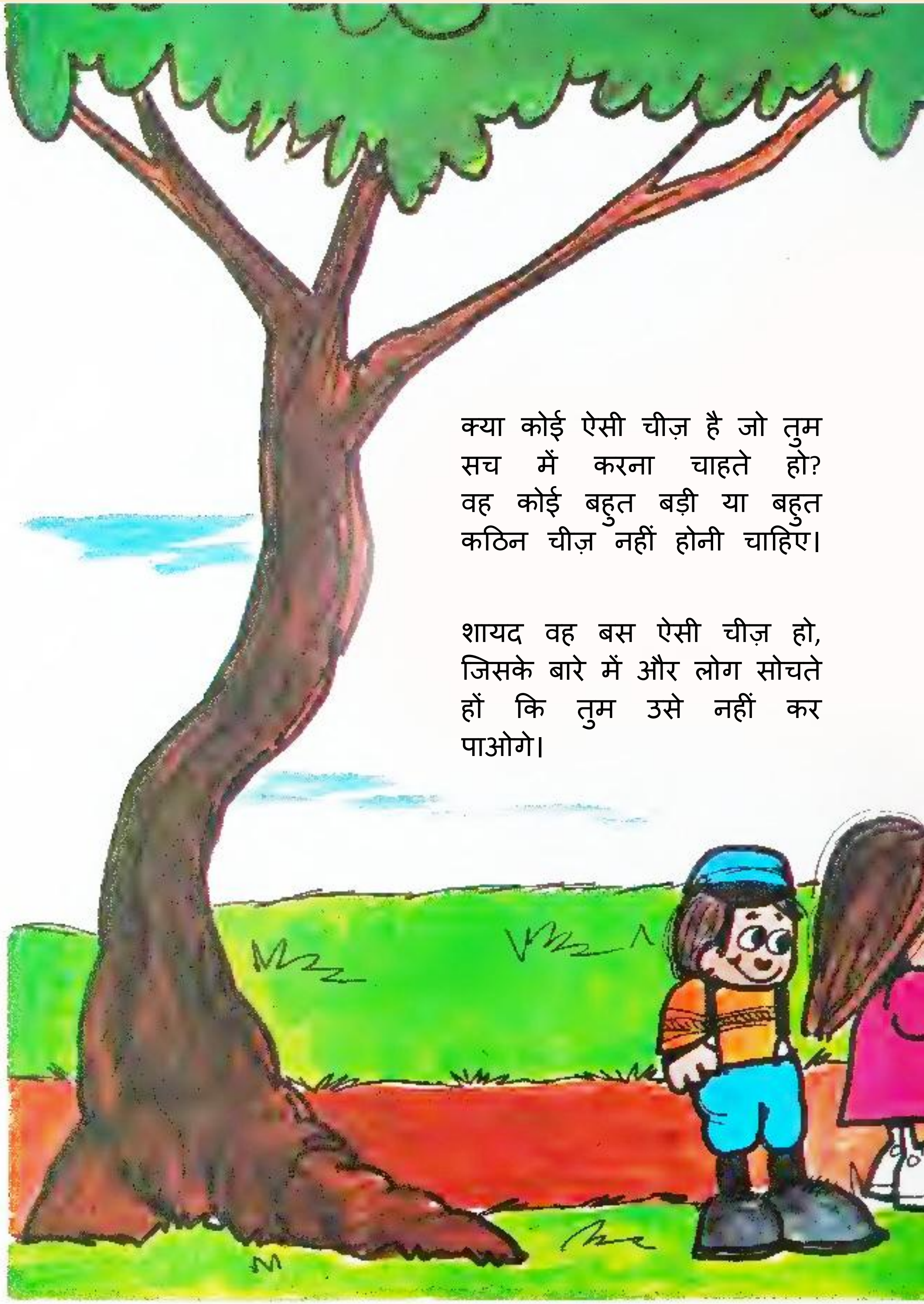


बिलकुल, जैसा कि आप देख सकते हैं, सब खुश थे — खासकर लुई पाश्चर। उन्हें पता था कि जब आप खुद पर विश्वास करते हैं, तो वह कितना अच्छा महसूस होता है।

और तुम्हारा क्या? क्या कभी तुम्हें भी ऐसा लगता है कि जब तुम खुद पर विश्वास करते हो, तो तुम्हें खुशी मिलती है?

शायद तुम्हारे लिए यह सोचना उपयोगी होगा कि खुद पर विश्वास करने का कितना बड़ा महत्व होता है।





क्या कोई ऐसी चीज़ है जो तुम सच में करना चाहते हो? वह कोई बहुत बड़ी या बहुत कठिन चीज़ नहीं होनी चाहिए।

शायद वह बस ऐसी चीज़ हो, जिसके बारे में और लोग सोचते हों कि तुम उसे नहीं कर पाओगे।

तो क्या तुम हार मान लोगे – सिर्फ़ इसलिए कि दूसरे लोग ऐसा सोचते हैं? या फिर तुम खुद पर विश्वास करोगे?



और अगर तुम्हें इतना अच्छा लगता है जब तुम खुद पर विश्वास करते हो, तो क्या तुम अपने दोस्तों को भी अच्छा महसूस करने में मदद कर सकते हो – उन्हें खुद पर विश्वास करने के लिए प्रेरित करके?

क्या यह बेहतर होगा कि तुम दूसरों के विचारों पर हँसो और मज़ाक उड़ाओ, या यह बेहतर होगा कि तुम उन्हें कहो – "हाँ, तुम सच में यह कर सकते हो!"

अब तुम रेबीज़ का इलाज तो नहीं खोज सकते वह तो पहले ही खोजा जा चुका है। लेकिन तुम कुछ ऐसा कर सकते हो जो उतना ही महत्वपूर्ण है।



तुम खुद पर विश्वास करने का महत्व सीख सकते हो, और जो कुछ तुमने सीखा है, उसे अपने जीवन में लागू कर सकते हो। फिर तुम भी अधिक खुश रहोगे — बिलकुल हमारे प्रिय मित्र लुई पाश्चर की तरह।





लुई पाश्चर

लुई पाश्चर का जन्म फ्रांस के डोल नामक नगर में, ज्यूरा प्रांत में, 1822 में हुआ था। एक रसायनज्ञ के रूप में — और बाद में एक जीवाणुविज्ञानी (बैक्टीरियोलॉजिस्ट) के रूप में — पाश्चर ने अपने समय के किसी भी अन्य व्यक्ति से अधिक चिकित्सा विज्ञान की प्रगति में योगदान दिया।

हालाँकि, क्योंकि वह एक चिकित्सक नहीं थे, 1800 के दशक के कई डॉक्टरों ने उनके सिद्धांतों का मज़ाक उड़ाया। लेकिन उन्होंने उनके उपहास की परवाह नहीं की, क्योंकि उन्हें पूरा विश्वास था कि बैक्टीरिया या कीटाणु वास्तव में होते हैं और वे बीमारियाँ पैदा कर सकते हैं।

उन्होंने पूरे विश्वास के साथ अपने तरीके से काम करना जारी रखा और अंततः रेशम के कीड़ों की बीमारी, एंथ्रैक्स और रेबीज़ — इन तीनों के इलाज की खोज की।

पाश्चर ने दूध को खराब होने से बचाने की एक प्रक्रिया भी खोजी। इसमें दूध को 140°F पर तीस मिनट तक गर्म किया जाता था, फिर उसे तुरंत ठंडा करके सीलबंद, कीटाणुरहित (स्टेराइल) बर्तनों में रखा जाता था। यह प्रक्रिया आज भी दूध को कीटाणुरहित रखने के लिए प्रयोग की जाती है, और इसे **पाश्चरीकरण (Pasteurization)** कहा जाता है।



पाश्चर ने स्ट्रासबर्ग की मैरी लॉरेंट से विवाह किया, जिनसे वे गहराई से प्रेम करते थे। मैरी ने हमेशा उन्हें अपने प्रयोगशाला के काम को प्राथमिकता देने के लिए प्रेरित किया, जिससे वे अपने कार्य पर पूरा ध्यान केंद्रित कर सके और उत्कृष्ट शोध कर पाए।

जब छोटे जोसेफ माइस्टर को एक पागल कुत्ते ने चौदह बार काट लिया और उसे लुई पाश्चर के पास लाया गया, तो वैज्ञानिक ने अपने अब तक अपरीक्षित रेबीज़ टीके को देने में हिचकिचाहट दिखाई।

उन्होंने वह टीका तभी दिया जब दो चिकित्सकों ने यह इंगित किया कि बिना टीके के लड़के की मृत्यु निश्चित है — और शायद पाश्चर के पास ही उसका इलाज हो सकता है।

निश्चित रूप से, पाश्चर के पास ही उत्तर था — और उन्होंने जोसेफ माइस्टर की जान बचा ली। बाद में माइस्टर पाश्चर संस्थान में चौकीदार (gatekeeper) बन गए और अपने जीवन के अंत तक लुई पाश्चर के प्रति निष्ठावान बने रहे।

हालाँकि पाश्चर को स्वयं पर गहरा विश्वास था, फिर भी वे जीवनभर विनम्र और शांत स्वभाव के व्यक्ति बने रहे। 1895 में अपनी मृत्यु तक वे साधारण और नम्र बने रहे। अपने अंतिम वर्षों में वे अक्सर यह देखकर थोड़े हैरान और प्रसन्न होते थे कि लोग उनके प्रति कितनी श्रद्धा और उत्साह दिखाते हैं।

एक बार उन्होंने लंदन में एक अंतरराष्ट्रीय चिकित्सा सम्मेलन में भाग लेने का निमंत्रण स्वीकार किया। जब वे पहुँचे, तो एक सेवक ने उनसे कहा कि वे सभा कक्ष के आगे की ओर चलें। जैसे ही पाश्चर आगे बढ़े, सभी सदस्य अपनी सीटों से उठ खड़े हुए और ज़ोरदार तालियाँ बजाने लगे।

पाश्चर कुछ हैरान से लगे और बोले, “शायद वेल्स के राजकुमार आ रहे हैं। काश, हम थोड़े पहले पहुँच जाते ताकि उन्हें बेहतर देख पाते।” लेकिन अध्यक्ष ने उनका हाथ थामते हुए कहा, “नहीं, यह आप के लिए हैं। आप ही के लिए ये सब तालियाँ बजा रहे हैं।”


समाप्त